Volume-9, No. 2 Aug.-2022, pp. Hin.13-18

समाज तथा किशोरों पर सोशल मीडिया का बढता प्रभाव तथा उसके दुस्प्रभाव

डॉ.वीरेन्द्र कुमार, अस्टिेन्ट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग, डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालिज
अनूपशहर बुलन्दशहर उत्तर–प्रदेश भारत

सार–
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज के साथ ही रह सकता है आधुनिक युग तकनीकि का युग है मनुष्य तकनीकि का उपयोग कर रहा है। वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज में निकटता का गहरा संबंध है। मानव की जिज्ञासु प्रकृति के परिणाम स्वरूप ही आज संचार के नये–नये माध्यमों का विकास तेजी से हो रहा है जिनकी बदोलत ही सूचनाऐं सर्वसूलभ हो गई है। इन्टरनेट ने एक वर्चुअल मीडिया की रचना की गई है जिसे हम सोशल मीडिया के नाम से जानते हैं। सोशल मीडिया ने एक तरह से प्रत्येक व्यक्ति को मीडिया हाउस का मालिक बना दिया जहां वो अपनी अभिव्यक्ति को टेक्स्ट, फोटो तथा वीडियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। सोशल मीडिया पारिवारिक जीवन से जुड़ा हुआ है जो व्यक्तिगत रूप से मित्रों, रिश्तेदारों और परिवार के मध्य सम्पर्क स्थापित करने के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करता है जो किशोरों की सबसे आम गतिविधियों में से एक है। संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों के साथ–साथ सामाजिक चुनौतियों में किशोरों के विकास के लिए इन्टरनेट ने नये अवसर प्रदान किये है। इस कारण बालक हो, किशोर हो या फिर पुरानी विचारधारा के लोग वे सभी इन्टरनेट और सोशल मीडिया पर अधिक निर्भर रहने लगे हैं, जिसके कारण उनको इसकी लत सी लग गई है जिसका सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव किशोरों के साथ–साथ उनके माता–पिता, परिवार तथा समाज पर भी आज देखने को मिल रहा है। किशोरों के साथ–साथ उनके माता–पिता को सोशल नेटवर्किंग साइट्स की प्रकृति एवं उनके पड़ने वाले प्रभावों से अवगत तथा समझाने में शिक्षक, मनोचिकित्सक एवं चिकित्सकों द्वारा मदद एवं जागरूक करना चाहिऐ ताकि वे एक स्वस्थ वातावरण तैयार कर उनका सही उपयोग करने के लिए एक अच्छी पृष्ठभूमि तैयार कर सकें।

शब्दार्थः इन्टरनेट, सोशल मीडिया, सोशल नेटवर्किंग, किशोर, परिवार, समाज, साइबर बूलिंग, साइबर स्टाकिंग

प्रस्तावना–

मनुष्य जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी तब बनता है जब वह सम्प्रेषण द्वारा सांस्कृतिक, अभिवृतियों, मूल्यों और व्यवहारों को आत्मसात कर लेता है। सामाजीकरण की प्रत्येक स्थिति और उसका हर रूप सम्प्रेषण पर आश्रित है। इसी के आधार पर सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराएं, विचार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंच पाते है।

भावनाओं तथा अभिव्यक्तियों का आदान–प्रदान करना ही सम्प्रेषण कहलाता है। ''वे लोग जिन्हें लोगों की जरूरत है'' केवल एक वाक्यांश नहीं है, हमारे जीवन में इसकी प्रासंगिकता अधिक है जिसे सोशल मीडिया सही चरितार्थ करता है।

संचार माध्यमों के विकास और बढ़ती भूमिकाओं को हम आज देख रहें हैं कि कुछ वर्ष पहले सपने में भी नहीं सोचा था कि बातचित (संवाद) के लिए एक ऐसा समय आयेगा कि केवल एक स्पर्श से ही सारे विश्व की जानकारी एक क्षण में आंखों के सामने आ जाती है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के विभिन्न रूपों में जुड़ना एक नियमित गतिविधि है जो संचार, सामाजिक सम्पर्क तथा तकनीकी कौशल को बढ़ाकर दोस्तों, सहपाठियों और साझा रूचि वाले लोगों से जुड़ने के लिए हर व्यक्ति को कई दैनिक अवसर प्रदान करती हैं।

सोशल मीडिया इतना शक्तिशाली हथियार बन गया है इसकी दुनिया से बाहर निकलना मुश्किल सा लगता है। हाल के कुछ वर्षों में कोविड–19

दौरान ऐसी साइटों का उपयोग करने वाले किशोरों की संख्या में नाटकीय वृद्धि हुई है। इस बढ़ोतरी से पता चलता है कि इस पीढ़ी का सामाजिक और भावनात्मक विकास बड़ी संख्या में इन्टरनेट और एंड्रोइड फोन पर हो रहा है आज बहुत से माता–पिता प्रौद्योगिकी का अविश्वसनीय रूप से उपयोग करते हैं और अपने किशोर बालकों के द्वारा उपयोग किये जा रहे कार्यक्रमों और ऑनलाईन मुद्दों के साथ सहज और सक्षम महसुस करते हैं। इसके बावजुद भी कुछ माता–पिता को कई कारणों से अपने किशोर बच्चों के साथ तालमेल बिठाने की तकनीकी क्षमता नहीं होना है।

जैक्सन, वॉन, बार बेट्सिस और ब्रोसिया फिट्ज रोनाल्ड (2003) में बताया कि ''नेटवर्किंग एक ऐसी प्रक्रिया है जहां किशोर बालक अपने विचारों, रूचि को लम्बे समय तक जीवित मुद्दों पर माता–पिता के लाभ से जोड़ते हैं। इसके अलावा उन माता–पिता को अक्सर इस बुनियादी समझ की कमी होती है कि किशोरों का ऑनलाईन जीवन उनके ऑफलाईन जीवन का एक विस्तार है।''

अंतिम परिणाम अक्सर माता–पिता और किशोरों के बीच एक ज्ञान और तकनीकी कौशल का अन्तर होता है जो माता–पिता और किशोरों के ऑनलाईन दुनिया में एक साथ भाग लेनें के तरीके में एक पृथकता पैदा करता है।

जब भी मीडिया या सोशल नेटवर्किंग साइट्स की बात आती है तो अच्छे से अच्छे को चुनना मुश्किल हो जाता है। यही कारण है कि सोशल मीडिया किशोरों पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव उसके उपयोग एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

गेमइन्फोवायर (2008) ने अपने शोध में बताया कि बुलिंग, गुट बनाना, यौन प्रयोग जैसे ऑफ लाईन व्यवहारों में अक्सर ऑनलाई अभिव्यक्तियां होती हैं जिन्होंने साइबर बुकिंग, फेसबुक डिप्रेशन, सैक्सटिंग, गोपनीयता के मुद्दों जैसी समस्याऐं किशोरों के सामने आती है। किशोरावस्था बचपन और व्यस्कता के बीच सक्रमण अवधि है जिसमें पहचान, निर्माण, कामुकता, सहकर्मी संबंध और आत्म मूल्यों को शोषण किया जाता है क्योंकि सोशल मीडिया तकनीकी समझ और रचनात्मकता दिखाने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

व्यस्कों की तुलना में सोशल मीडिया का उपयोग करना किशोरों के लिए कई बार जोखिम का भी कारण बन जाता है। यह जोखिम सहकर्मी से सहकर्मी के बीच, अनुचित सामग्री के उपयोग से और ऑनलाईन गोपनीयता के मुद्दों की समझ के अभाव के कारण अधिकतर देखने को मिलते हैं।

आत्म नियमन के लिए उनकी सीमित क्षमता और साथियों के दबाव के प्रति संवेदनशीलता के कारण सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं तो किशोरों को नई–2 चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसके कारण कई जोखिम/खतरे उत्पन्न हो जाते हैं।

प्रमुख जोखिम–

1. साइबर स्टाकिंग

इलेक्ट्रॉनिक संचार उपकरणों के माध्यम से किसी का पीछा करना आभासी दुनिया में किसी व्यक्ति की निजता का अतिक्रमण करना और उसकी हर गतिविधि पर नजर रखकर अवैध रूप से सूचनाओं का प्रयोग करते हुए सम्बन्धित व्यक्ति का मानसिक उत्पीड़न किया जाता है जिसमें झूठे आरोप, मान हानि, बदनामी और परिवाद, पहचान की चोरी आदि बाते शामिल है।

यह एक तरह से मानसिक कुण्ठा की प्रकृति है जो पीडित के जीवन को न केवल तहस नहस कर सकती है बल्कि उसे मनोरोगी या आत्महत्या जैसी त्रासदी में धकेल सकती है। सोशल मीडिया के प्रति बढ़ते किशोरों का रूझान से हर माता–पिता को उनकी इसी लत से चिंता रहती है।

2. दोषपूर्ण सामाजिक संबंध

सभी रिश्ते नकारात्मक प्रभाव का सामना नहीं करते कुछ उनसे सीखकर अधिक सकारात्मक तरीके से देखते हैं। सोशल मीडिया के कारण आज पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों में नकलीपन आ गया है। इन्टरनेट और सोशल मीडिया पर अनजान (आभासी) मित्रों के साथ असीमित घण्टे अपना समय व्यतीत करते हैं और परिवार और हितेषी मित्रों के साथ बहुत ही सीमित समय बिताते हैं। जो परिवारिक बंधन को कमजोर करता है। आज किशोर रियल लाईफ टे रील लाईफ के भंवर में फसा हुआ है। इस आधुनिकता की चकाचौध के कारण आपसी रिश्तों को बनाये रखना और उनका निर्वाह करना आसान कार्य नहीं रहा। ये किशोर विभिन्न रिश्तेदारों के साथ वास्तविक जीवन की बातचीत से चूक जाते हैं। उनका वास्तविक जीवन सीमितता के दायरे में बंध जाता है। जिसके कारण उन किशोरों में विकृत सामाजिक

कौशलता का उद्भव होने लगता है। यह बात उनको सामाजिक अलगाव की ओर ले जाती है। हैकिंस और जिओ (1999) तथा वेकेनबर्ग (2009) में अपना मत

जिन किशोरों में धनिष्ठ मित्रता नहीं होती है उनके आत्म सम्मान का स्तर कम होता है और कुसमायोजन के मनोवैज्ञानिक लक्षण होते है। जिन लोगों के पास अधिक सामाजिक सम्पर्क होता है वे शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक खुश और स्वस्थ होते है।

3. साईबर बुलिंग

यह किसी अन्य व्यक्ति के बारे में झूठी, शर्मनाक या शत्रुतापूर्ण जानकारी सम्प्रेषित करने, अभद्र–अश्लील भाषा, चित्रों तथा इंटरनेट पर किसी को परेशान करने के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग करने की प्रक्रिया है। जिसे तकनीकी भाषा में साइबर बुलिंग कहा जाता है। ऑनलाईन उत्पीड़न को अक्सर ''साइबर बुलिंग'' शब्द के साथ एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है।

आज हमारे बच्चे, किशोर और युवा जहां बड़ी आसानी से इंटरनेट फ्रेंडली हो रहे हैं, वहीं वे अनजाने में कई प्रकार के दुष्प्रभावों का शिकार भी आसानी से हो रहे हैं। यह सभी किशोरों और उनके परिवारों के लिए सबसे आम ऑनलाईन जोखिम है।

जो अवसाद, चिंता, गंभीर अलगाव और दुःखद आत्महत्या सहित मनोवैज्ञानिक परिणामों का कारण बन सकती है।

4. दिग्भ्रमित होने का खतरा

भौतिकवाद की चकाचौंध, विलासिता से जीवन जीने की चाह आज किशोरों में देखने को मिलती है जिसके लिए वे इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपनी असली पहचान छुपाकर नकली (फैक) पहचान बनाकर अनैतिक गतिविधियों में संलिप्त (कम्प्यूटर की भाषा में स्पुफिंग कहते है) हो कर दूसरों के साथ धोखाधडी जैसी घटनाओं को अन्जाम देने लगें हैं।

जिसके कारण उनका शैक्षिक जीवन अपराध जगत की ओर जाने का भय हर माता–पिता को चिंतित करने लगा है।

5. सेक्सटिंग

सोशल मीडिया प्लेटफार्म मैसेंजर, फेसबुक, व्हॉट्अप और दूसरे चैटिंग साइट्स पर एड्रोइड फोन, कम्न्यूटर अथवा अन्य डिजिटल उपकरणों के माध्यम से यौनरूप से स्पष्ट, अश्लील संदेश (फोटो, वीडियो रिकार्ड कर देखना और अग्रेषित करना आदि) भेजने का सेक्सटिंग के नाम से जाना जाता है।

कुछ किशोर जो सेक्सटिंग में शामिल होते है उन्हें धमकी दी जाती है, उन पर गुडांगर्दी के आरोप लगाये जाते हैं। किशोर कानुन के दुराचार और अपराधियों के लिए स्कूल निलंबन और पीड़ित के लिए मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के साथ भावनात्मक संकट की स्थिति बन जाती हैं। हालांकि कई परिस्थितियों में सेक्सटिंग की घटना को एक छोटे सहकर्मी समूह या एक जोड़े से आगे साझा नहीं किया जाता है।

विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि दुनिया भर में किशोर, बालक इस वक्त तेजी से इस समस्या की चपेट में आ रहे हैं। जो कि बालक एवं किशोरों के यौन व्यवहारों से जुड़ी हुई चीज है जो उनकी परवरिश तथा मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल रही है। इसके अलावा इससे बच्चे एवं किशोर अपराध की दुनिया में भी कदम रखने से गुरेज नहीं करते हैं। सोशल मीडिया की दुनिया में नीजता को किस तरह ताक रखी जा रही है। इसी बात को लेकर मां–बाप चिंतित रहते हैं। वे बच्चों से यह कहने में भी उलझन महसूस करते हैं कि सोशल मीडिया पर ज्यादा सक्रियता खतरनाक होती है।

6. फेसबुक डिप्रेशन

फेसबुक पर अत्यधिक चैटिंग पर किये गये शोधों से ''फेसबुक डिप्रेशन'' नामक एक नई घटना का प्रस्ताव दिया है। यह तब विकसित होता है जब पूर्व किशोर और किशोर फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साइटों पर काफी समय व्यतीत करते हैं और फिर अवसाद के क्लासिक लक्षणों को प्रदर्शित करना शुरू करते हैं।

साथियों द्वारा स्वीकृति और उनके साथ सम्पर्क किशोरों के जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। ऑनलाईन दुनिया की तीव्रता को एक ऐसा कारक माना जाता है जो किशोरों में अवसाद का ट्रिगर कर सकता है। ऑफलाईन अवसाद के साथ पूर्व किशोर और किशोर जो फेसबुक अवसाद से पीड़ित है वे सामाजिक अलगाव के लिए जोखिम में हैं और कभी–2 ''सहायता'' के लिए जोखिम भरी इन्टरनेट साइटों और ब्लॉगों की ओर रूख करते हैं जो मादक द्रव्यों के सेवन, असुरक्षित यौन प्रथाओं अथवा आत्म विनाशकारी के दमनकारी व्यवहार को बढ़ावा दे सकते हैं।

7. नीजता भंग होने का खतरा

वर्तमान समय में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने की किशोर एवं युवा वर्ग के विद्यार्थियों में होड सी मची हुई है। भावउकता और नादानी में अपनी हर छोटी से छोटी व्यक्तिगत जानकारी और फोटो शेयर कर देते हैं, जिससे उनकी नीजता हनन होने का डर बना रहता है।

8. साम्प्रदायिक माहौल बिगड़ने का खतरा

सोशल मीडिया जहां सकारात्मक भूमिका अदा करता है वहीं कुछ लोग इसका गलत उपयोग भी करते हैं। ऐसे लोग दुर्भावनाएं फैलाकर लोगों को धर्म, जाति में बांटने की कोशिश करते हैं। वे सोशल मीडिरूा के माध्यम से भ्रामक और नकारात्मक जानकारी, विड़ियों, साझा करते है जिससे की जनमानुस पर इसका प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है।

किशोर एवं किशोर विद्यार्थी अपरिपक्त मानसिकता के होते है जल्द ही भावनाओं में बह जाते है और उन पोस्ट्स को, विडियों को आगे से आगे प्रसारित करते जाते है जिससे साम्प्रदायिक माहौल इतना ज्यादा खराब हो जाता है कई बार तो वह इतना हिंसक हो जाता है कि निर्दोष लोगों की जान भी चली जाती है। दिल्ली दंगे, गोधरा कांड, जम्मू–कश्मीर में पत्थरबाजी की घटना, मुज्जफर नगर दंगे, लिंचिंग, जिहाद इसके ज्वलंत उदाहरण है।

9. अवास्तविक जीवन शैली का खतरा

सोशल मीडिया किशोरों को कहीं न कहीं अवास्तविक जीवनशैली की तरह मोड़ रहा है उनको सोशल अकाउंट वास्तविक जीवन से अधिक महत्वपूर्ण लगने लगे है, दुःख–सुख, दिन हो या रात, हर बार चाहे वे निजी जीवन से ही क्यों ना जूड़ी हो, सोशल मीडिया के माध्यम से ही अभिव्यक्त/जाहिर करने की मानसिकता किशोरों को वास्तविक जीवन से दूर ले जा रही है।

10. बैंक से जुड़ी गोपनीय जानकारी चोरी के साथ ऑनलाईन धोखाधड़ी का खतरा

आज देश में सभी मोबाईल सेवा प्रदाता कम्पनी उपभोक्ता को बिना आधार कार्ड के अपनी सेवायें प्रदान नहीं करती, दूसरी ओर प्रत्येक बैंक खाताधारक को अपना आधार लिंक करवाना RBI के निर्देशानुसार अनिवार्य हैं। ऐसी स्थिति में किशोर बालक जब सोशल मीडिया का उपयोग करते है तो साइबर अपराधी कभी बैंक कर्मचारी बनकर तो कभी आर्थिक प्रलोभन के मैसेज, लिंक के साथ विभिन्न सोशल प्लेट फार्मों पर भेजते रहते हैं। अपनी ना समझी के कारण वे जाने–अनजाने में उन लिंक्स पर क्लिक कर देते है जिससे दूर बैठे साईबर अपराधी को बैंक की पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है और वे बैंक खाते से ऑनलाईन धोखाधड़ी की घटनाओं को अन्जाम दे देते हैं।

ऐसी घटनाऐं रोज अखबारों में, न्यूज चैनलों पर देखने और सुनने को मिलती रहती हैं। इस प्रकार की घटनाओं के कारण बैंक खाताधारकों को आर्थिक नुकसान होने का खतरा बना रहता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान में सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर समय बिताना हर वर्ग के लोगों के जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। विशेषकर किशोर विद्यार्थी जब इसको ज्यादा अहमियत देने लगते हैं तो वे अपने जीवन की महत्वपूर्ण बातों (जैसे – करियर, स्वास्थ्य और मानसिक शांति, समाज तथा परिवार के दायित्वों) को भूल जाते है। इसका दुरूपयोग भी उनके लिए खतरा बनता जा रहा है। हर माता–पिता अपने बालकों के भविष्य के लिए चिन्तित रहता है। वे नहीं चाहते की उनके शैक्षिक जीवन किसी ओर रास्ते पर जाये जिसके परिणाम गंभीर और चिंताजनक हो।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स का अधिक उपयोग बालको, किशोरों एवं युवाओं को मानसिक और भावनात्मकता रूप से प्रभावित कर रहा है। जिससे कई बार तनाव, क्रोध आदि समस्याओं से जुझना पड़ता है।

सोशल मीडिया सकारात्मक भूमिका के साथ नकारात्मक भूमिका भी अदा करता है। भ्रामक और नकारात्मक जानकारियों के साझा करने से जनमानस के साथ–2 समाज पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है।

इन सभी को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने **''समाज तथा किशोरों पर सोशल मीडिया के बढ़ते जोखिम''** को शोध पत्र के रूप में चुनाव किया है।

संदर्भ सूची–

1. स्वर्ण सुमन (2014)– ''सोशल मीडियाः सम्पर्क क्रान्ति का कल, आज और कल'' ISBN 13: 9789351362715, ISSN 10: 935136271X
2. मिलर डेनिपल, कोस्टा एलिसाबेट्टा (2016): ''दुनिया ने जैसे सामाजिक मीडिया को बदल दिया'', VCL प्रेस लन्दन
3. ''पुलिस विज्ञान'' पत्रिका अंक 142, जनवरी–जून 2020 ISSN- 2230-7044, प्रकाशन– पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
4. www.ravindraprabhat.in ''सामाजिक मीडिया और हम'' लेखक– रविन्द्र प्रभात, अलीगंज (लखनऊ)
5. www.rrijm2015.org > ''युवाओं में सोशल मीडिया के बढ़ते अवसाद के प्रभाव का अध्ययन'' By- प्रियंका दुबे, डॉ. सन्दीप अथाया Volume-03 issue 12, Dec. 18, issn: 2455-3085
6. www.ijcrt.org- ''सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव'' संतोष नरूका, डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, नागौर, Volume 6, issue - 1 Jan. 2018, ISSN - 2320-2882
7. www.ijciras.com> भारतीय राजनीति की उभरती प्रवृतियाँः सोशल मीडिया के दौर में लोकतन्त्र और डेटा चोरी By: डॉ. अम्लेन्दू त्रिपाठी, Vol. 2, issue 3, ISSN (O) - 2581-5334, July 2019
8. www.ijcms2015.co- ''सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका सार'' By: डॉ. पूनम जोशी, Vol. I, issue- iii, ISSN -2455-5997
9. www.mentalhealthcare.in> ''सोशल मीडिया और युवा पीढ़ी की मानसिक समस्याऐं, लेखिका– डॉ. नाज परवीन 29.08.2020
10. www.momspress.com> Article> ''सोशल मीडिया का किशोरों पर बढ़ता प्रभाव'' लेखक– प्रगति त्रिपाठी, 5 सितम्बर 2017
11. www.navodayatimies.in > ''सोशल मीडिया से ऐसे पड़ रहा है किशोरों के वास्तविक जीवन के सम्बन्धों पर प्रभाव, 22.01.2018
12. www.jagarn.com > ''युवाओं में बढ़ती अतिसक्रियता व उसके दृष्परिणाम'' डॉ. देवेन्द्र कुमार पाठक, 24 सितम्बर 2015
13. www.newswriters.in> ''बदलते दौर के साथ सोशल मीडिया का सामाजिक दायरा'' (Online Journalism) "A possitive and negative effects of social media on society" Vol 5 (10), Oct. 2017, E - issn - 2347-2693, www.ijcseonline.org
14. "The effect of social media on society" By - Mulugeta deribe damota, Madda Walabu university, Bale Robe, Ethupia New Media and mass communication., Vol -78, 2019 ISSN - 2224-3267 (paper), ISSN - 2224-3275 (Online)
15. "Use of social media in education : positive and negative impact of the students" ISSN : 2321 - 8169, Page 281-85, Volume 4, issue 1, Jan. 16.
16. www.ijirset.com> positive and negative impact of social media on "Education, Teenagers, Business and society" By- Harshit Lad, ISSN (Online) : 2319-8753, ISSN (Print) : 2347-6710, Vol. 6, issue 10, October 2017.
17. "The roll of emtims in on social media: A literature review" By: Hissu Hyvarinen, Raman Beck, IT University cophenhagen ISBN - 9780998133119, page 1797-1806
18. www.m.hindi.webdimia.com- सोशल मीडिया के लाभ और नुकसान
19. www.prathamhindi.in> सोशल मीडिया के नुकसान–2021, April 15, 2021, Sonipainuly
20. www.lifehack.org> "10 Negative effects of social media that can harm your life". By Amanda Ribe, Apr. 19, 2021

21. www.kubbco.com> what are the negative effects of social media on children, teen's and adults? By- Cris Kubbernus, Feb. 01, 2021
22. www.techprevue.com > the negative effects of social media on teenangers, youth or adolescents. By - Vinay prajapati, Feb. 23, 2021